:द्वितीय अध्याय :

भीष्म साहनी की प्रतिनिधि कहानियों का प्रतिपाद्‌य

: द्वितीय अध्याय :

भीष्म साहनी की प्रतिनिधि कहानियों का प्रतिपादय

भीष्म साहनी की प्रतिनिधि कहानियों के पात्र विभिन्न जीवनस्थितियों में पड़े अर्ध-सामंती, अर्ध-पूँजीवादी भारतीय समाज की अनेक जटिल परतों को खोलते हैं। इन पात्रों की बुराईयाँ, उनका अज्ञान और उनके हालात व्यक्तिगत नहीं बल्कि सार्वजनिक और व्यवस्थाजन्य है। इनके साथ ही इन कहानियों में ऐसे चरित्रों की भी कमी नहीं है जो गहन मानवीय संवेदना से भरे हुए हैं।

2.1 मानवीय मूल्यों की पहचान और परिवेश बोध :-

भीष्मजी ने मानवीय संबंधों की पहचान और परिवेशबोध को आंकने के लिए अपने रचनात्मक सामर्थ्य का पूरा-पूरा उपयोग किया है। सम्बन्धों और मूल्यों की पहचान तथा परिवेश बोध की दृष्टि से 'चीफ की दावत', 'वाङ्चू', 'ओ हरामजादे' कहानियाँ उल्लेखनीय हैं।

'चीफ की दावत' की माँ परम्परा का द्योतक है जिसे आधुनिकता के अति उत्साह में व्यर्थ और उपेक्षनिय समझ लिया जाता है। जहाँ एक ओर यह कहानी मातृ-हृदय की वात्सलता को रेखांकित करती है वहाँ दूसरी ओर उन लोगों पर करारा व्यंग्य भी है, जो अपनी संस्कृति और परम्परा को विदेशियों की दृष्टि से देखते हैं, परखते हैं। माँ तो पहले छिपाने की चीज थी लेकिन साहब के मनोभाव व्यक्त होते ही वह गर्व का आलम्बन बन जाती है। भीष्मजी ने इस कहानीद्वारा आज की संस्कृति किस तरह पाश्चात्यों से प्रभावित है यह दिखाने का प्रयास किया है और उसे स्वार्थ केंद्रित, स्वकेंद्रित कहा है। जैसे माँ हरीद्वार जाना चाहती है लेकिन शामनाथ कहता है -"तुम चली जाओगी तो फुलकारी कौन बनायेगा ? साहब से तुम्हारे सामने ही फुलकारी देने का इकरार किया है।"[1]

'वाङ्चू' यह कहानी भी भारतीय मूल्यों की पहचान कराती है। 'वाङ्चू' कहानी का प्रमुख पात्र वाङ्चू नामक एक चीनी बौद्ध भिक्षु है, जिसे धर्म के अलावा और किसी चीज से मतलब नहीं था। लेकिन उसे राजनीति और समाज ने परेशान कर दिया। इस कहानी में धार्मिक स्वतंत्रता के मूल्य की स्थापना की है और धर्म की आलोचना भी की है, जो समाज और राजनीति से उसका कोई वासता नहीं होता, संबंध नहीं होता। गलत राजनीति कभी भी दो देशों के बीच के मानवीय और सांस्कृतिक संबंध को नहीं देख पाती। वाङ्चू तो वास्तव में न चीनी था और न भारतीय भी था। वह एक मनुष्य मात्र था और इसीलिए वह चीनी भी था और भारतीय भी था। लेकिन इस बात को गलत राजनीति ने नहीं सनझा और मानव मूल्य की उपेक्षा की गई।

'ओ हरामजादे' यह एक प्रवासी भारतीय की कहानी है। जिसमें लाल नामक इंजिनीयर के अपने देश के प्रति अद्भूत प्रेम का वर्णन किया गया है। देश प्रेम का मतलब उसके लिए सिर्फ देश की प्रकृति नहीं बल्कि देश का वासी और देश की संस्कृति भी है। एक ओर लाल का देश प्रेम तो दूसरी ओर पत्नी-प्रेम है। लाल देश-प्रेम और पत्नी-प्रेम इन दोनों मूल्यों में सामंजस्य की स्थिति कायम रखता है। अपने देश के प्रति ललक बनाये रखकर वह देश-प्रेम का परिचय देता है और भारत न लौटकर वह पत्नी प्रेम का परिचय देता है।

2.2 वर्ग-विशेष के स्त्री-पुरूषों की अमानवीयता :-

वर्ग-भेद की भावना आदिकाल से ही हमारे समाज में चली आ रही है। बहुसंख्य समाज में सभी लोग एक ही श्रेणी के नहीं हो सकते। इसीलिए उँच-नीच, अमीर-गरीब, मालिक-नोकर, शोषक एवं शोषित का अन्तर तो समाज में निरन्तर चलता आ रहा है और इनका द्वन्द्व तो सम्पूर्ण मानवजाति के इतिहास में दिखाई देता है। इस वर्ग-द्वन्द्व में अमीर, मालिक, शोषकों के चक्की में गरीब, शोषित जनता पिस जाती है।

भीष्मजी ने मध्यवर्ग के स्त्री-पुरूषों की अमानवीयता का चित्रण 'त्रास', 'साग-मीट'

कहानियों में किया है। 'साग-मीट'एक अफसर के परिवार से संबंधित कहानी है। इस कहानी में जग्गा नामक एक इमानदार, वफादार नौकर है जो अफसर याने अपने मालिक के छोटे भाई के दूराचरण से व्यथित होकर मौन प्रतिरोध करता हुआ आत्महत्या करनेपर मजबूर हो जाता है। अफसर उसके प्रति दयालू था क्योंकि उसका कहाना था कि,-"सौ पच्चास दे दो तो गरीबों का मुँह बन्द हो जाता है।"[2] वह भाई के प्रति अपने स्नेह को जग्गा की जान से बढ़कर समझता है। जग्गा उस परिवार में लगातार याद किया जाता है, पर इन्सान के रूप में न होकर एक बढ़िया साग-मीट तैयार करनेवाले रसोइये के रूप में।

'त्रास' कहानी में एक कारवाला साहब है, जो एक निम्न-मध्यवर्गीय व्यक्ति को जो साइकिल पर जा रहा था, जान-बूझकर उसे अपनी कार से धक्का दे देता है। यह साईकिलवाले के प्रति कारवालों की घृणा की अभिव्यक्ति ही दिखाई देती है। बाद में अपने बचाव के लिए कारवाले साहब ने घायल साइकिलवाले व्यक्ति को अस्पताल पहुँचाया तो वह यह देखकर विस्मित रह गया कि आहत व्यक्ति के मन में उसके प्रति आक्रोश न होकर कृतज्ञता का भाव था। "मुझे मौत के मुँह से निकाल लाये हैं। सड़कपर पड़े आदमी को कौन उठाता है? यह मुझे उठा लाए है।"[3] स्पष्ट है कि आहत व्यक्ति सिर्फ अस्पताल पहुँचाने से कृतज्ञता से भर उठता है।

2.3 घृणा और हिंसा के यज्ञ में निर्दोष की बली :-

निम्नवर्ग और निम्न-मध्यवर्ग के व्यक्ति हीनता-ग्रंथी के दबाववश अस्वाभाविक लगनेवाला आचरण कर बैठते हैं। इन व्यक्तियों का गुस्सा किसी समर्थ व्यक्ति, वर्ग या व्यवस्था के प्रति होता है, लेकिन उनपर सीधा प्रहार करने की हिम्मत नहीं बन पाती। गुस्से की अभिव्यक्ति कहीं तो होती ही है अत: वह क्रोध अपने से किसी दुर्बल या निरीह पर प्रभाव के रूप में फूट पड़ता है।

'वाङ्‌चू' भीष्म साहनी जी की एक लम्बी कहानी है और यह कहानी एक बौद्ध भिक्षु को केंद्र में रखकर राजनीतिक अन्तर्विरोधों की पड़ताल करती है। 'वाङ्‌चू' कहानी में इस सत्य को प्रत्यक्ष रूप में कहा गया है कि -"सामाजिक शक्तियों को समझे बीना तुम बौद्ध धर्म को भी कैसे समझ

पाओगे ? ज्ञान का प्रत्येक क्षेत्र एक-दूसरे से जुड़ा है जीवन से जुड़ा है। कोई चीज जीवन से अलग नहीं है। तुम जीवन से अलग रहकर धर्म को कैसे समझ सकते हो।"[4]

वाङ्‌चू को राजनीति में कोई दिलचस्पी नहीं थी। वाङ्‌चू जिस तरह चीन और भारत से दोनों के अमला तन्त्रद्वारा प्रताड़ित, उपेक्षित होता है, उससे मिलता है कि घृणा और हिंसा के यज्ञ में निर्दोष की बली पहले चढ़ती है।

'अमृतसर आ गया है' में बाबू पठानों का कुछ नहीं बिगाड़ पाता। बहुत देर तक अपना गुस्सा अन्दर ही दबाये रखता है। जैसे ही अमृतसर नजदीक आता है, बाबू कहीं से लोहे की छड़ लाता है और पठानों को ललकारता है। पठान भागकर दूसरे डब्बे में चले जाते है लेकिन इसकी प्रतिक्रिया में वह एक आम आदमी को मार गिराता है। बाद में लोहे की छड़ को फेक देना और उसकी मुस्कान का बीभत्स हो जाना इस बात का प्रमाण है कि किसी निरीह पर प्रहार करना उसका स्थायी भाव है। बूढ़े मुसलमान का कोई कसूर न होते हुये भी वह बाबू के गुस्से का शिकार बन जाता है। गुस्से की अभिव्यक्ति कहीं तो होती है अत: वह क्रोध अपने से किसी दुर्बल या निरीह पर प्रभाव के रूप में फूट पड़ता है।

2.4 जमीन तथा जीवन से कटने का दर्द :-

मनुष्य समाजप्रिय होता है। इसीलिए वह अपने परिवेश और रिश्तों का भोक्ता होता है। वह अपनी जमीन, अपना समाज, अपने रिश्तों और अपने कर्म से जुड़ा होता है, उनसे अलग होनेपर वह सूनेपन और निरर्थकता का अनुभव करता है।

'वाङ्‌चू' और 'ओ हरामजादे' मूलत: मानवरिश्तों से जुड़ी संवेदनाओं की कहानियाँ है। ये कहानियाँ आदमी के भीतरी संसार और बाहरी संसार के गहन संबंधों को बड़ी खुबी से पाठकों के सामने प्रकट करती है।

‘वाङ्चू’ भीष्म साहनी की लम्बी कहानी है और इस कहानी में एक बौद्ध भिक्षु को केंद्र में रखकर राजनीतिक अन्तर्विरोधों की पड़ताल करती है। वास्तव में वाङ्चू अपने जीवन तथा जमीन से कटा हुआ है।इस सत्य को अलोकित करते हुये कहा है-”सामाजिक शक्तियों को समझे बीना तुम बौद्ध धर्म को भी कैसे समझ पाओगे ? ज्ञान का प्रत्येक क्षेत्र एक-दूसरे से जुड़ा है, जीवन से जुड़ा है। कोई चीज जीवन से अलग नहीं है।”[5] अत: वाङ्चू चीन और भारत के अमला तन्त्र द्वारा प्रताड़ित होता है। अपनी जमीन तथा जीवन से अलग होनेके कारण वाङ्चू को बहुत ही कष्ट उठाने पड़ते है और वह अन्त में भारत में ही एक गुमनाम मौत मर जाता है।

‘ओ हरामजादे’ का लाल किसी ग्रन्थि से पीड़ित नहीं है, बल्कि उसके सारे क्रियाकलाप अपनी जमीन से कटने के दर्द से प्रेरित है। पहले तो पाठकों की दृष्टि में उसकी भावनाएँ रूमानी किस्म के देश प्रेम के रूप में दिखलाई पड़ती है, जो देश के बाहर रहनेवाले हिन्दुस्तानी की आँखों में अपने किसी देशवासी से मिलनेपर चमकने लगती है। पर लाल के जीवन के पृष्ठ जैसे-जैसे खुलते जाते हैं तब उसकी समझदारी, प्रतिभा सपन्नता और समृद्ध वर्तमान दिखाई देता है। अपनी जमीन, भाषा और उसके प्रति आत्मीयता के लिए उसकी छटपटाहट इन शब्दों में व्यक्त होती हैं - “हाँ एक बात की चाह मनमें अभीतक भरी नहीं है, इस बुढापे में भी नहीं गई है कि सड़कपर चलते हुए अचानक कहीं से आवाज आये ओ हरामजादे !और मैं लपककर उस आदमी को छाती से लगा लूँ।”[6]

अपने देश, घर और जीवन पद्धति से उखड़े आदमी लाल की कहानी संकेत करती है कि व्यक्ति की सार्थकता उसके अपने परिवेश और समाज में है। इसीलिए ‘वाङ्चू’ और ‘ओ हरामजादे’कहानियों का जीवन तथा जमीन से कटने का दर्द यह प्रमुख उद्‌देश्य रहा है।

2.5 वृद्ध व्यक्तियों के प्रति उपेक्षाभाव :-

आज समाज में स्वार्थपरक सत्ता दिखाई देती है। इसीलिए बहुत-से लोग स्वार्थकेंद्रित हो गये हैं। मनुष्य अपने फायदे के लिए, स्वार्थ के लिए लढ रहा है और इसीलिए मानवीय रिश्तें टुटते

हुये नजर आते हैं। इन लोगों के स्वकेंद्रित प्रवृति से आज उनके ही घर में अपने माँ-बाप उन्हीं से उपेक्षित हैं, प्रताड़ित हैं। बूढे माँ-बाप के साथ ये लोग उनकी भावनाओं को आहत करनेवाला व्यवहार करते हैं, उनके प्रति उपेक्षाभाव रखते हैं।

'यादें' और 'चीफ की दावत' में वृद्ध व्यक्तियों के प्रति उपेक्षाभाव दिखाई देता है।

'यादें' कहानी में गोमा अपने ही घर में अपने बेटेद्वारा उपेक्षित है। गोमा एक वृद्धा हैं। इसीलिए वह घर में बेटा, बहु होने पर भी अकेली है। उसे एक कोठरी दी गई है और वह रात-दिन उसी कोठरी में रहती है। जैसे - "कोठरी की सामनेवाली दीवार के सहारे एक बूढ़ी औरत खाट पर पाँव लटकाये बैठी थी। पर वह लखमी को अभी तक नजर नहीं आयी। कोठरी में खाट के पायताने के साथ जुड़ा हुआ एक कमोड रखा था और साथ में एक टीन का डब्बा। बुढ़िया ने एक पटरे पर पाँव रखे थे। टाँगों पर जो सूजन के कारण बोझिल हो रहे थें, दो-दो फटे मोजों के चढे थे। कोठरी में से पेशाब, मैल कपड़ो और बुढापे की गंध आ रही थी। इन लोगों के अन्दर आ जाने पर दो चूहें, जो बुढिया की खाट पर उधम मचा रहे थे भागकर अपने बिलों में घुस गयें।"[7] रामलाल का पाँव की ठोकरे से माँ की कोठरी का दरवाजा खोल देना और बाहर आते ही बिजली बन्द कर देना ही माँ के प्रति उपेक्षाभाव प्रकट कर देता है।

'चीफ की दावत' की माँ भी अपना बेटा तथा बहु द्वारा उपेक्षित है। शामनाथ अपनी उन्नति के लिए अपने साहब को दावत देता है और बुढ़ी माँ को बन्द कमरे में बैठने के लिए कहता है - "और माँ, हम लोग पहले बैठकमें बैठेंगे ! उतनी देर तुम यहाँ बरामदे में बैठना। फिर जब हम यहाँ आ जाये, तो तुम गुसलखाने के रास्ते बैठक में चली जाना।"[8] ये लोग माँ को छुपाने की कोशिश कर रहें है ताकि इस जर्जर बुढ़ी को देखकर साहबपर इस घर का कोई बुरा प्रभाव न पड़े।

2.6 आज की अन्धी न्यायव्यवस्था :-

वस्तुत: वर्तमान न्यायव्यवस्था पूँजीवादी ही है, जो कि इसमें शोषक वर्ग का ही हित

है। यह व्यवस्था असली अपराधी को दण्ड नहीं दे पाती और निर्दोष किन्तु कमजोर वर्ग के लोगों को दण्ड देती है। इसीलिए समाज में इस व्यवस्था के प्रति अविश्वास की भावना फैल जाती है। स्पष्ट है कि आर्थिक दृष्टि से कमजोर आदमी को यह न्यायव्यवस्था न्याय नहीं दे पाती। आज की न्यायव्यवस्था सबूत और गवाही पर ही टिकी है। सबूतों को नष्ट किया जा सकता है और अपराधी को निरपराध घोषित किया जाता है।न्यायाधिश भी खरीदे जा चूकें हैं या किसी भी ढंग से उन्हें प्रभावित किया जा सकता है और कानून का इस्तेमाल अपने स्वार्थ के लिए किया जा सकता है।

'लीला नंदलाल की' में भारत की अन्धी न्यायव्यवस्था के परखचे उड़ाकर रख दिये हैं। कहानी के नायक का स्कूटर चोरी हो जाता है और वह पुलिस में रपट लिखवाता है - "पुलिस स्टेशन से निकला तो मुझे लगा मैं किसी मंदिर में से निकल रहा हूँ, सिर झुका हुआ, दोनों हाथ पीठ पर और दिमाग के अन्दर न्यायप्रियता और प्रजातंत्र का जैसे संगीत बज रहा था। उस वक्त तक वह आदमी बेकसूर है, जिस वक्त तक उसका कसूर साबित न हो जाये। वाह-वाह में अश-अश कर उठा, पर सड़कपर चलते हुए मेरी आँखों के सामने उस आदमी का, वैष्णोदेवी के उस भक्त का चेहरा घूम गया और मैं फिर असंमजस में पड़ गया। यह क्या कैफियत है यार ? पुलिस उससे माल बरामद करती है और कहती है यह चोर है, चोर खुद निराले में कह रहा है कि उसने चोरी की है --- मारो गोली, कानून जाने, कानून का बाप ! हमारी चीज हमें मिल गयी, अब कानून अपना इन्साफ करता फिरे।"[9]

बहुत ही तीखे व्यंग्य के साथ भीष्म साहनी जी ने आज की न्याय व्यवस्था के परखचे उड़ाकर रख दिये हैं।

2.7 आर्थिक विवशता :-

आर्थिक परिस्थिति से जूझते हुए अकेले व्यक्ति को सम्पूर्ण परिवार के उत्तरदायित्व का बोझ वहन करना सम्भव नहीं होता अत: नारी और पुरूष दोनों को भी आर्थिक रूप से समान-कर्मी होना चाहिए तभी पारिवारिक ढाँचा ठीक तरह से चल सकता है।

'गंगो का जाया' में गंगो की नोकरी जब छूट जाती है तब आर्थिक संतुलन डाँवाडोल हो जाता है और इन लोगों को दो जून की रोटी भी ठीक तरह से नहीं मिलती। गंगो का पति घीसू चिंतित है कि, अब कमानेवाला एक और खानेवाले तीन हैं। कभी चुल्हा जलता है तो कभी नहीं। घीसू तो अधभरे पेट की भूख चिलम के धूएँ से शान्त कर देता है और अन्त में अपना छोटा-सा बेटा रीसा को बुटपालीश का धन्धा करने के लिए विवश करता है। छोटा रीसा जब अपने धन्धे के लिए रास्ते पर आ जाता है तब वह दिल्ली की बड़ी-बड़ी गलियों में कहीं गुम जाता है। बेटे के देर तक घर न लौटने के कारण दोनों पति-पत्नी चिंतित हैं लेकिन - "घीसू का उद्विग्न मन जहाँ बेटे के यूँ चले जाने पर व्याकुल था, वहाँ इस दारूण सत्य को भी न भूल सकता था कि अब झोपडे में दो ही आदमी होंगे, और बरसात काटने तक और गंगो की गोद में नया जीवन आने तक, झोपड़ा शायद सलामत खड़ा रह सकेगा।"[10]

समाज के व्यक्तियों के पारिवारिक सम्बन्ध अर्थपर ही निर्भर होते हैं। आर्थिक स्थिति में परिवर्तन आने के बाद सामाजिक सम्बन्धों में भी परिवर्तन आ जाता है। समाज में व्यक्ति की हैसियत उसके कर्म, उसकी योग्यता पर निर्भर न होकर उसकी आर्थिक स्थिति पर निर्भर होती है। अगर आप के पास पर्याप्त धन नहीं है तो आपके साथ समाज में या घर में भी वही व्यवहार होगा जो नोकरों के साथ होता है। इसीलिए 'खून का रिश्ता' कहानी का मंगल सेन बाबूजी का चाचा जात भाई होने पर भी उसकी स्थिति नौकरों जैसी ही है। उसका घर के नौकरों के सामने अपमान किया जाता है, क्योंकि वह गरीब है।

वस्तुस्थिति यह है कि लोग अर्थ के पीछे पड़कर मानवीय सम्बन्धों को भूल रहे हैं। इस यथार्थ की अभिव्यक्ति इस कहानी में हुई है। एक चांदी के चम्मच के लिए मंगलसेन की तलाशी लेकर उसे सबके सामने यहाँ तक की नोकरों के सामने भी अपमानित किया जाता है। संकेत मात्र यह है कि 'खून का रिश्ता' एक चांदी के चम्मच के आगे तुच्छ हो गया है, उसे कोई कीमत नहीं रही है।

2.8 मातृत्व के दो आयाम :-

परिवार में माँ का स्थान महत्वपूर्ण होता है। उसकी पुरातन छबी ममतामयी, स्नेहमयी

और त्याग की देवी के रूप में ही रही है। यह तो सच है कि, माँ बच्चे के जन्म से लेकर उसके पालन-पोषण और रक्षण का काम करती है।

'माता-विमाता' में लेखक ने मातृत्व के दो आयामों को स्पष्ट किया है। एक गरीब कुंवारी मजदूरिन बच्चे को जन्म देती है तो वह लोकलाजवश उसे एक बंजारनके हवाले करती है जो कि वह बंजारन उसकी पड़ोसिन है। बंजारन बच्चे को सम्भालती है। कुछ दिन बाद जब बंजारन गाँव छोड़कर जाने लगी तब बच्चे की माँ रोने लगती है और अपना बच्चा मांगने लगती है। लेकिन बंजारन ने उसे अपना ही बच्चा समझकर स्नेह, प्यार किया था। इसीलिए वह बच्चे को देने के लिए तैयार नहीं है और बच्चे की माँ भी बच्चे को अपनी नजरों से ओझल, अपने से दूर करने के लिए तैयार नहीं है। अत: प्रश्न यहाँ यह खड़ा होता है कि "हवलदार दुविधा में पड़ गया। एक ने जनकर फेंक दिया, दूसरीने दूध पिलाकर बड़ा किया। बच्चा किसका हुआ ?"[11] अत: निकट साहचर्य से मातृत्व बोध की सम्भावना ही इस कहानी का प्रमुख प्रतिपाद्य है।

2.9 अफसरी रोब :-

अफसर लोग अर्थ सम्पन्न होने के कारण उनकी अपनी एक अलग दुनिया होती है, अपनी पोजिशन होती है, अलग सोसायटी होती है। उन्हें सामान्य लोगों से कोई वास्ता नहीं होता बल्कि उनके प्रति इन लोगों के मन में एक प्रकार की घृणा की भावना होती है। यह लोग अपनी हैसियत के, अपनी बराबरी के लोगों के साथ ही मैत्रीपूर्ण व्यवहार करते हैं।

'कुछ और साल' का मधुसूदन इसी प्रकार का पात्र है। वह जिस तरह ऑफिस में रहता है उसी तरह का वातावरण उसने घर में भी तैयार किया है। बहुत दिनों बाद उसका दोस्त शिवशंकर उसे मिलने आता है लेकिन - "अपने नाम से सीधा सम्बोधन किया जाना साहब को अच्छा नहीं लगा। उन्होंने अपना दायाँ पैर, जिस पर से अभी-अभी मोजा उतारा गया था, उठाकर शिवशंकर की सोफा-कुरसी की बाँहपर, शिवशंकर के पास ही रख दिया।"[12] इस व्यवहार से साफ है कि मधुसूदन शिवशंकर

को उसकी हैसियत दिखा रहा है।

निष्कर्ष :-

भीष्म साहनी जी ने मानवीय मूल्यों की पहचान और परिवेश बोध को आंकने के लिए अपने रचनात्मक सामर्थ्य का पूरा-पूरा उपयोग किया है। मानवीय मूल्यों और संबंधों की पहचान तथा परिवेश बोध की दृष्टि से 'चीफ की दावत', 'वाङ्चू', 'ओ हरामजादे' कहानियाँ उल्लेखनीय हैं। वर्ग भेद के कारण मानवीय मूल्य नष्ट होते जा रहे हैं। वर्ग भेद के कारण समाज में ऊँच-नीच, अमीर-गरीब, मालिक-नोकर, शोषक एवं शोषित का अन्तर निरन्तर चला आ रहा है। उच्चवर्गीय शोषक गरीबों का हमेशा शोषण करते रहते हैं। उनके साथ अमानवीय व्यवहार करते हैं। 'त्रास', 'सागमीट' कहानियों में इस तथ्य का उद्घाटन हुआ हैं। उच्चवर्गीय लोग जब गरीबों पर अत्याचार करते हैं तब वे उनके दबाव में आकर हीनता-ग्रंथी से ग्रस्त हो जाते हैं और अस्वाभाविक लगनेवाला अचरण कर बैठते हैं। इन व्यक्तियों का गुस्सा किसी समर्थ व्यक्ति, वर्ग या व्यवस्था के प्रति होता है, लेकिन उन पर सीधा प्रहार करने की हिम्मत नहीं बन पाती। तब उनके गुस्से की अभिव्यक्ति किसी दुर्बल या निरीह पर प्रभाव के रूप में फूट पड़ती है। इसका चित्रण 'वाङ्चू', 'अमृतसर आ गया है' कहानियों में किया गया है। मनुष्य समाजप्रिय होता है। वह अपने समाज से, अपने रिश्तों से, अपने कर्म से जुड़ा हुआ होता है। अगर वह उनसे अलग हो जाता है तब वह सूनेपन और निरर्थकता का अनुभव करता है। 'वाङ्चू' और 'ओ हरामजादे' कहानियों में यह तथ्य प्रतिपादित किया है। आज समाज में स्वार्थपरक सत्ता दिखाई देती है। प्रत्येक मनुष्य अपने स्वार्थ के लिए लढ़ रहा है। इसीलिए मानवीय मूल्य टूटते जा रहे हैं। आज अपने ही घर में वृद्ध माता-पिता अपने बच्चों द्वारा उपेक्षित हैं। 'यादे' और 'चीफ की दावत' कहानियाँ इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। भीष्म साहनीजी ने आज की अन्धी न्यायव्यवस्था के परखचे उड़ाकर रख दिये हैं 'लीला नंदलाल की' कहानी द्वारा। आर्थिक विवशता के कारण लोग अनेक समस्याओं को जूझते रहते हैं। अर्थ के सामने मनुष्य को विवश होना पड़ता है। 'गंगो का जाया', 'खून का रिश्ता' कहानियों में इसका उद्घाटन किया है। 'माता-विमाता' कहानी में मातृत्व के दो आयामों को चित्रित

किया है तो 'कुछ और साल' कहानी में मध्यवर्ग के दिखावटीपन पर तीखा व्यंग्य तथा अफसरी रोब का चित्रण किया है।

: सन्दर्भ :

1. प्रतिनिधि कहानियाँ- भीष्म साहनी, पृ. 22

2. वही, पृ. 107

3. वही, पृ. 137

4. वही, पृ. 117

5. वही, पृ. 117

6. वही, पृ. 97

7. वही, पृ. 43

8. वही, पृ. 16

9. वही, पृ. 148

10. वही,पृ. 14

11. वही, पृ. 38

12. वही, पृ. 54

****